bihar board 8th class Geography notes Chapter 1 संसाधन

संसाधन
पाठ का सारांश-मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने वाले सभी जीव-जंतु, वस्तुएँ एवं पदार्थ संसाधन कहलाते हैं। संसाधन मानव जीवन के लिए अनिवार्य है क्योंकि इसके विविध उपयोग हैं। उपयोग के अनुसार इसकी मांग एवं मूल्य में भी अंतर आ जाता है। जैसे—जंगल से काटकर लाई गई लकड़ियों के रूप में परिवर्तन लाकर विभिन्न उपयोगी वस्तुएँ खटिया, पलंग, कुर्सी, मेज, खिड़की, दरवाजे इत्यादि बनाई जाती हैं। इससे लकड़ी के उपयोग एवं मूल्य दोनों में परिवर्तन आ जाता है। इस प्रकार सभी संसाधन उपयोगी एवं मूल्यवान होते हैं तथा सभी उपलब्ध वस्तुएँ संसाधन हैं । अर्थात् कोई भी वस्तु संसाधन तभी बनता है जब उसका कोई उपयोग अथवा मूल्य होता है। संसाधनों के बिना विकास संभव नहीं है। संसाधन किसी क्षेत्र के विकास के लिए आधार का काम करते हैं। हम किसी भी चीज को अपनी आवश्यकतानुसार संसाधन का रूप देते हैं, जैसे—नदी या मरुस्थल में पड़े बालू का वहाँ कोई उपयोग नहीं होता । परन्तु जब वहाँ से उठाकर बालू को निर्माण कार्य हेतु गाँव या शहर में लाया जाता है तब इसका उपयोग और मूल्य दोनों बदल जाते हैं। कहा जा सकता है कि संसाधन होते नहीं, बनाये जाते हैं।

संसाधन मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं-
(1) प्राकृतिक संसाधन–प्रकृति में पाये जाने वाले सभी जीव-जन्तु, वस्तुएँ एवं पदार्थ प्राकृतिक संसाधन हैं।
(2) मानव संसाधन-मानव एक ऐसा संसाधन है जो संसाधनों का निर्माण एवं उपयोग दोनों करता है। मानव के संसाधनों में निर्माण एवं उपयोग की यह क्षमता उसके दिमागी एवं शारीरिक क्षमता तथा कौशल से विकसित होती है।
(3) मानवकृत संसाधन-मानव अपने श्रम से कई प्रकार की वस्तुओं का निर्माण प्राकृतिक वस्तुओं के स्वरूप एवं गुण में परिवर्तन लाकर करता है । मकान, कार्यालय भवन, पंचायत भवन, विद्यालय भवन, हवाई अड्डा, रेल-सड़क इत्यादि मानवकृत संसाधन के रूप में आते हैं।

प्राकृतिक संसाधन को भी दो भागों में बांटा जा सकता है-
(i) वास्तविक संसाधन:–वास्तविक संसाधन उन संसाधनों को कहा जाता है जिनकी कुल मात्रा ज्ञात होती है तथा इन संसाधनों का उपलब्ध तकनीकी की सहायता से वर्तमान समय में उपयोग किया जा रहा होता है।
(ii) संभाव्य संसाधन:-संभाव्य संसाधन का संसाधनों को कहा जाता है जिनकी कुल मात्रा ज्ञात नहीं होती है तथा वर्तमान समय में इनका उपयोग भी नहीं किया जा रहा होता है। इन संसाधनों का उपयोग भविष्य में घटने की संभावना होती है। जैसे—केरल में मिलने वाला थोरियम तथा लद्दाख में पाया जाने वाला यूरेनियम ।

उत्पत्ति के आधार पर संसाधनों को दो भागों में बाँटा जा सकता है-
(1) जैव संसाधन, (ii) अजैव संसाधन ।
जैव संसाधन के अंतर्गत सभी सजीव शामिल हैं । जैसे—पेड़, पौधे, वन, जीव-जंतु जबकि सभी निर्जीव वस्तुएँ अजैव संसाधन हैं । जैसे—खनिज, चट्टान, मिट्टी, भूमि, खेत, तालाब, नदी, झील ।
उपलब्धता के आधार पर भी कुछ प्राकृतिक संसाधनों को नवीकरणीय संसाधन तथा कुछ प्राकृतिक संसाधनों को अनवीकरणीय संसाधनों में वर्गीकृत किया जा सकता है । नवीकरणीय संसाधन वैसे प्राकृतिक संसाधनों को कहा जाता है, जिनकी पुनः पूर्ति प्राकृतिक रूप से होती रहती है। जैसे—सूर्य की किरणें एवं पवन । अनवीकरणीय संसाधन वैसे संसाधन हैं जिनके भंडार सीमित हैं तथा एक बार उपयोग में आने के बाद उनके पुनः पूर्ति में हजारों, लाखों वर्ष लग जाते हैं। जैसे—लोहा, कोयला, पेट्रोलियम, अभ्रक ।
कुछ ऐसे भी संसाधन हैं जो निश्चित स्थानों पर ही पाये जाते हैं। इन्हें स्थानीय संसाधन कहा जाता है। जैसे—

https://www.evidyarthi.in/

कोडरमा में पाया जानेवाला अभ्रक, जादूगोड़ा में मिलने वाला यूरेनियम, छोटानागपुर क्षेत्र में पाया जाने वाला कोयला ।

स्वामित्व के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों को निजी, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संसाधनों में बाँटा जाता है। भूमि, मिट्टी, जल, जीव-जंतु, वन, खनिज पदार्थ, सूर्य प्रकाश, नदी, सागर, पवन इत्यादि सभी प्राकृतिक संसाधनों का वितरण इस पृथ्वी पर है। परन्तु यह वितरण काफी असमान है जिसका प्रमुख कारण स्थलरूप में मिलना पाया जाना है।

प्राकृतिक संसाधनों के बिना मानव जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। परन्तु इन संसाधनों के उपयोग की तकनीक एवं उन संसाधनों की आवश्यकता का होना आवश्यक है। मनुष्य ने अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया है। हमने कई प्राकृतिक संसाधनों का इतना अधिक खनन एवं उपयोग किया है कि इनके भंडार धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। भविष्य में इनके भंडार खत्म होने की पूरी आशंका है। मानव के लिए इनका होना भविष्य में भी उतना ही जरूरी है जितना आज । मानव जीवन सतत् चलता रहे इसके लिए यह जरूरी है कि हम इन अमूल्य प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग सुनिश्चित कर इसे भविष्य के लिए संरक्षित करें ।

https://www.evidyarthi.in/